सुधा ओम ढींगरा

उपन्यास : नक़्क़ाशीदार केबिनेट

कहानी संग्रह : दस प्रतिनिधि कहानियाँ, कमरा नंबर 103, कौन सी ज़मीन अपनी, वसूली। अनूदित: कौन सी ज़मीन अपनी (कुनखन आपून भूमि, असामी), टारनेडो, ओह कोई होर सी (पंजाबी), कविता संग्रह: सरकती परछाइयाँ, धूप से रूठी चाँदनी, तलाश पहचान की, सफ़र यादों का। संपादन: वैश्विक रचनाकार: कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ भाग 1 एवं 2 (साक्षात्कार संग्रह), इतर (प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियाँ), सार्थक व्यंग्य का यात्री: प्रेम जनमेजय, मेरा दावा है (अमेरिकी शब्द-शिल्पियों का काव्य संकलन), गवेषणा, प्रवासी साहित्य: जोहान्सबर्ग के आगे (संपादन सहयोग), परिक्रमा (पंजाबी से अनूदित हिन्दी उपन्यास), कई कहानियाँ अंग्रेज़ी में अनूदित। 45 संग्रहों में कविताएँ, कहानियाँ, आलेख प्रकाशित, माँ ने कहा था (काव्य सी.डी.)।

सम्प्रति : विभोम स्वर एवं शिवना साहित्यिकी की प्रमुख संपादक और ढींगरा फ़ाउण्डेशन की उपाध्यक्ष एवं सचिव हैं।

केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा 2014 का पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 2013 का हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान, स्पंदन संस्था, भोपाल की ओर से 2013 का स्पंदन प्रवासी कथा सम्मान।

संपर्क:
101, गाईमन कोर्ट, मोरिंस्विल
नार्थ कैरोलाइना-27560, यू.एस. ए.
फोन: +1-919-678-9056
मोबाइल: +1-919-801-0672
ई मेल: sudhadrishti@gmail.com

विमर्श-अकाल में उत्सव

(स्थगित समय में फँसे जीवन का आख्यान)

संपादक : डॉ. सुधा ओम ढींगरा

SHIVNA PRAKASHAN
ISBN 978-93-81520-52-9
9 789381 520529 >
Price ₹ 250, Year 2017
Vimarsh-Akaal Me Utsav
Edited by
Dr. Sudha Om Dhingra
शिवना प्रकाशन

विमर्श-अकाल में उत्सव
(स्थगित समय में फँसे जीवन का आख्यान)
संपादन : डॉ. सुधा ओम ढींगरा

''इस साल उपन्यासों में केवल एक किताब उल्लेखनीय है -पंकज सुबीर का उपन्यास 'अकाल में उत्सव'। यह गाँव और किसान जीवन के दुख-दर्द कहने वाली रचना है। इस उपन्यास को पढ़कर कहा जा सकता है कि किसान जीवन में आजकल सुख कम और दुख ज़्यादा है। इस उपन्यास में एक किसान की आत्महत्या भी है। शासन-प्रशासन द्वारा उस किसान को पागल घोषित कर अपनी ज़िम्मेदारी से बचने की कोशिश की जाती है।'' -**डॉ. मैनेजर पांडेय (शीर्ष आलोचक)** 'जनसत्ता' समाचार पत्र में 'साहित्य इस बरस' चर्चा के अंतर्गत वर्ष 2016 की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की चर्चा करते हुए।

सच में वाह। मैं यूँ भी आपके लिखे हुए की प्रशंसक हूँ। ज्ञानपीठ से प्रकाशित 'ये वो सहर तो नहीं' से लेकर अब 'अकाल में उत्सव' तक। किसान की पोती हूँ। हर बार घर के गमलों में जब कोई पौधा रोपती हूँ तो इसी आत्मविश्वास के साथ कि यह पनपेगा ही। फलेगा और फूलेगा भी। पर कभी फूल तोड़ने की हिम्मत नहीं हुई, कभी कोई फल तोड़ने की भी नहीं। क्यों है प्राप्ति से ऐसी विरक्ति। ग्रहण करने से ज़्यादा वे डाल पर लगे ही अच्छे लगते हैं। शायद ये एक किसान परिवार के पुश्तैनी संस्कार हैं। जहाँ लहलहाती हुई फ़सल सबसे बड़ा धन होती है। ट्यूबवैल ख़राब हो गया, उसकी पाइप फट गई है, डीज़ल नहीं मिल रहा है, अब ट्रैक्टर ख़रीदना है, थ्रेशर के लिए और इंतज़ार करना पड़ेगा.... मेरी स्मृतियों के ये कुछ वाक्य हैं, जो अकसर दादा, चाचा या पापा की बातचीत में सुना करती थी। फिर भी सब सकुशल ही रहा अब तक। ब्याह-शादियाँ अकसर मई-जून में की जाती थीं, जब सुनहरे दानों से घर के कोठार भर जाया करते थे। यह पूरे गाँव का उत्सव होता था। कुँवारी लड़कियाँ रास से पॉकेट मनी जोड़ लिया करती थीं। हर खेत से उनके लिए रास निकलती थी । अग्रज लेखक पंकज सुबीर का यह उपन्यास रामप्रसाद और कमला के घर, परिवार, खेत और संघर्ष की कथा को बहुत नजदीक से बयाँ करता है पर पता नहीं क्यों उपन्यास में पूरा गाँव जैसे सुन्न है, दृश्य से बाहर है। शायद यह गाँव जीवित होता तो रामप्रसाद को कोई तो रोक पाता कुएँ में शरण पाने से। कोई तो ढाढस बँधाता कि कलेक्टर की मंडली और सरकारी दाँव-पेंच गाँव की सामुहिक हिम्मत से बढ़कर नहीं। शायद उस क्षेत्र के गाँवों की यही वास्तविक कथा हो, जहाँ अकाल जीवन से बड़ा हो जाता है। पंकज सुबीर को इस सार्थक रचना के लिए साधुवाद। आप यूँ ही लिखते रहें।

-योगिता यादव, 911, सुभाष नगर, जम्मू
(लेखिका, महत्त्वपूर्ण युवा कथाकार हैं।)